राजस्थान में अकाल की समस्या और प्रबन्ध

डॉ. विक्रम सिंह

राजस्थान भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर पश्चिम भाग में स्थित है। राज्य की भौगोलिक स्थिति 23° 30′ से 30° 12′ पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है। इसकी आकृति विषमकोण चतुर्भुज के समान है जो कि उत्तर से दक्षिण में लम्बाई 826 किलोमीटर तथा 69पूर्व से पश्चिम की ओर चौड़ाई 869 किलोमीटर है। क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का सबसे बड़ा राज्य है जो कि देश के कुल क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत भू–भाग रखता है। भौंगोलिक दृष्टि से राजस्थान के पूर्व में गंगा यमुना का मैदान, दक्षिण में मालवा का पठार तथा उत्तर तथा उत्तर–पूर्व में व्यास–सतलज नदियों के द्वारा निर्मित मैदान स्थित है। इस प्रकार भौगोलिक स्थिति होने के बावजूद राजस्थान के समय–समय पर अकाल एवं सूखे की समस्या का सामना करना पड़ता है। इस समस्याको देखते हुए मैंने ''राजस्थान में अकाल की समस्या और उसका प्रबन्धन'' विषय पर अपने शोध पत्र को दृष्टिगत करने का प्रयास किया है। क्योंकि राजस्थान में विशिष्ट भौगोलिक एवं जलवायुगत विशेषताओं के कारण अकाल व सूखे की समस्या प्रमुख रूप से रही है। इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए राजस्थान में अकाल एवं सूखे के पारस्परिक अर्न्तसम्बन्धों को इस शोध पत्र के द्वारा समझाने का प्रयास किया गया है।

किसी क्षेत्र विशेष में वर्षा औसत से 50 प्रतिशत से भी कम होने की स्थिति को अकाल कहा जाता है, जबकि सूखे की स्थिति में वर्षा का औसत से भी कम होती है। इन दोनों ही स्थितियों में कृषि उपजों एवं जलीय व्यवस्था अस्त–व्यस्त हो जाती है जिसके प्रभावों के तौर पर भौतिक, सामाजिक और आर्थिक दशाओं में व्यापक स्तर पर परिवर्तन आ जाता है।

इन समस्या को दृष्टिगत रखते हुए शोध के समय निम्न परिकल्पनाओं को ध्यान में रखा गया है :–

विगत वर्षों में जलवायु परिवर्तनों से राजस्थान में वर्षा के रूप में जल उपलबधता कम हुई है।

- प्रदेश में शुष्क एवं अर्द्धशुष्क जलवायु क्षेत्र का समय के साथ–साथ विस्तार हुआ है।
- वर्षा की कालिका एवं स्थानिक अनियमित प्रकृति अकाल की समस्या उत्पन्न करती है जिससे कृषि अर्थव्यवस्था अस्थिर प्रकृति की रही है।

इन परिकल्पनाओं के आधार पर ही इस शोध पत्र के लिए कुछ उद्देश्य ध्यान में रखे गए है, जो कि निम्नलिखित है :–

- अकाल की भौगोलिक संदर्भ में अवधारणात्मक व्याख्या।
- राज्य में अकाल गहनता का कालिक एवं स्थानिक दृष्टि से मूल्यांकन करना।
- राज्य में वर्षा प्रारूप का विश्लेषण करना ।
- अकाल प्रबन्ध की व्यू नीतियों की समीक्षा करना।
- अकाल का राज्य की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन।

इन्ही सब उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर अकाल को स्पष्ट करने वाले निम्न कारकों को आधार मानकर राजस्थान में पड़ने वाले अकाल को स्पष्ट किया जा सकता है। अतः अकाल के निम्न भौगोलिक सूचक एवं मापक हैं जो अकाल को स्पष्ट करते हैं :–

- मासिक औसत वर्षा
- औसत से कम वार्षिक वर्षा
- बुवाई के समय 21 दिन या अधिक दिन वर्षा का होना
- फसल नष्ट होने के प्रभाव के रूप में ।

उपरोक्त भौगोलिक सूचक अकाल की स्थिति को स्पष्ट करते है कि इन सूचकों के आधार पर ही राजस्थान में अकाल की पुनरावृत्ति को भी देखा गया है जो निम्न तालिका में स्पष्ट किया गया है :–

राजस्थान में अकाल की पुनरावृत्ति

क्र.सं.	पुनरावृत्ति वर्ष	प्रभावित जिले
1.	तीन वर्ष	बाड़मेर, जैसलमेर, जालौर, जोधपुर और सिरोही
2.	चार वर्ष	बजमेर, बीकानेर, बूंदी, डूंगरपुर, श्रीगंगानगर, नागौर, हनुमानगढ़ और चूरू
3.	पांच वर्ष	अलवर, बासंवाडा, भीलवाड़ा, जयपुर, झुन्झुनू, पाली, सवाई माधोपुर, सीकर, दौसा और करौली
4.	छः वर्ष	चित्तौड़गढ, झालावाड, कोटा, उदयपुर, टोंक, राजसमन्द और बारां
5.	आठ वर्ष	भरतपुर और धौलपुर

उपरोक्त तालिका से राजस्थान के अकाल की स्थिति स्पष्ट होती है कि पांच जिलो में तीन वर्ष दौरान, आठ जिलो में चार वर्ष, दस जिलों में पांच वर्ष में, सात जिलो में छः वर्ष में एवं केवल दो जिलो ं में आठ वर्ष की अवधि में अकाल की पुनरावृत्ति होती है।

उपरोक्त आंकड़ों के आधार पर ही शोध पत्र में राजस्थान में अकाल गहनता को भी वर्णित करने का भी प्रयास किया गया है जो कि निम्न प्रकार से है :–

अकाल गहनता – 50 प्रतिशत से अधिक गांव वाले जिले

क्र.सं.	जिले का नाम	प्रतिशत
1.	बाड़मेर	86.47
2.	डूंगरपुर	80.00
3.	जोधपुर	75.58
4.	उदयपुर	65.79
5.	जालौर	53.36
6.	नागौर	52.20

उक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि बाड़मेर एक ऐसा जिला है जहां पर 86.47 प्रतिशत गांव अकाल की गहनता से प्रभावित रहे हैं जबकि दूसरी और नागोर ऐसा जिला है जहां पर सबसे कम अर्थात् 52.20 प्रतिशत गांव ही अकाल की चपेट में आए। अतः इससे स्पष्ट हो जाता है कि राज्य की अकाल गहनता में अन्तर रहता है।

अकाल गहनता–25 प्रतिशत से अधिक व 50 प्रतिशत से कम गांव वाले जिले

क्र.सं.	जिले का नाम	प्रतिशत
1.	पाली	47·67
2.	जयपुर	32·43
3.	बारां	27·74
4.	हनुमानगढ़	25·10

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 25 से 50 प्रतिशत प्रभावित गांवों की श्रेणी में पाली ऐसा जिला है जहां पर अकाल की गहनता 47.67 प्रतिशत रही जबकि दूसरी और हनुमानगढ जिले में अकाल गहनता 25.10 प्रतिशत रही । अतः स्पष्ट है कि राजस्थान में समय–समय पर मानसून की अनिश्चितता के कारण अकाल की स्थिति में अन्तर दिखाई देता रहता है।

अकाल गहनता – 25 प्रतिशत कम गांव वाले जिले

क्र.सं.	जिले का नाम	प्रतिशत
1.	अलवर	24.55
2.	भरतपुर	23.84
3.	गंगानगर	22.58
4.	दौसा	21.81
5.	धौलपुर	20.53
6.	कोटा	19.28

तालिका से स्पष्ट होता है कि 25 प्रतिशत से कम अकाल गहनता वाले 5 जिलों के आकड़ों को देखने से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक अकाल से प्रभावित गांव अलवर जिले में 24.55 प्रतिशत हुए जबकि सबसे कम अकाल से प्रभावित गांव कोटा जिले में 19.28 प्रतिशत रहे। इससे स्पष्ट हो जाता है कि राज्य के उक्त 5 जिलों में अकाल की स्थिति में अन्तर रहा है।

राजस्थान में इन सभी आंकड़ो को देखने से यह स्पष्ट हुआ है कि अकाल एवं सूखे से क्षेत्रीय पर्यावरण में व्यापक स्तर पर परिवर्तन देखे जाते हैं जो कि निम्नलिखित रूप में है :– जैसे,

- पेयजल एवं कृषि के लिए जल की अत्यन्त कमी
- पशुओं के लिए चारे एवं आहर की कमी
- रोजगार की समस्या

- परम्परागत जलीय स्त्रोतों के जल की कमी जिससे क्षेत्रीय असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न होती है।
- अकाल की समस्या से व्यापक स्तर पर जन–स्थानान्तरण होता है।

अतः अकाल एवं सूखें की भयावह समस्या को ध्यान मे ंरखते हुए अपने शोध पत्र में इसको नियंत्रित करने के तात्कालिक एवं दीर्घकालिक समाधान प्रस्तुत किए है।

तात्कालिक समस्या के समाधान :–

- महानरेगा के माध्यम से रोजगार प्रदान करना।
- जल भराव को दूर करने हेतु परम्परागत साधनों की मरम्मत करना।
- टैंकरों द्वारा जल उपलब्ध करवाना।
- पशुओं के लिए चारा एवं दवाईयों की व्यवस्था।

दीर्धकालिक समस्या के समाधान :–

- शुष्क कृषि पद्धति अपनाना।
- राष्ट्रीय फसल बीमा योजना को क्षेत्र की समस्त फसलों पर लागू करना।
- किसान क्रेडिट कार्ड उपलब्ध करवाना।

•परिस्थति में परिवर्तन हेतु वनोरोपण करना।

- सतही एवं भूजल का समुचित एवं प्रभावी उपयोग करना।

प्रवक्ता (भूगोल)
एस.एस.एस.पी.जी.कॉलेज, जमवारामगढ, जयपुर